

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 31 — गोपी-गीत

5 October 2026



यमुना की चाँदनी-धुली बालू पर ब्रज की गोपियाँ, अपने प्रियतम को ओझल पाकर, एक ऐसा गीत उमड़ने देती हैं जो संसार से कुछ नहीं, केवल उन्हीं को माँगता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह इकतीसवाँ अध्याय आदि से अन्त तक एक अखण्ड गीत है, जिसे ब्रज की गोपियों ने कालिन्दी के तट पर तब गाया जब श्रीकृष्ण उनकी दृष्टि से ओझल हो गए। भक्तजन इन उन्नीस श्लोकों को उसी नाम से जानते हैं जो संस्कृत पुष्पिका ने दिया — गोपी-गीत।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 31 (एकत्रिंश अध्याय)

- अध्याय शीर्षक: गोपियों का विरह-गीत (गोपी-गीत)
- मुख्य वक्ता: ब्रज की गोपियाँ, जिनका गीत श्री शुकदेव गोस्वामी सुनाते हैं
- मुख्य श्रोता: श्रीकृष्ण, जिन्हें वे सम्बोधित करती हैं; वृत्तान्त राजा परीक्षित सुनते हैं
- मुख्य स्थल: वृन्दावन में कालिन्दी (यमुना) का बालू-तट, चाँदनी रात में
- केंद्रीय विषय: श्रीकृष्ण के विरह में ब्रज की गोपियों का गान
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 31, श्लोक 1-19
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (पूर्ण संस्करण)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

रास के बीच कृष्ण के अदृश्य हो जाने पर गोपियाँ वन-वन भटकीं, लताओं और वृक्षों से पता पूछा, चरण-चिह्नों का अनुसरण किया और चाँदनी बुझने तक खोजती रहीं। लौटकर कालिन्दी के बालू-तट पर, उन्हीं में डूबी और उनके आगमन को व्याकुल, वे एक स्वर में गाने लगीं।

कालिन्दी के तट पर उठा गीत

शीतल बालू पर, जल में बिखरी चाँदनी के बीच, वे वन की श्याम रेखा की ओर मुख कर बैठीं और गाने लगीं — एक-दूसरे से नहीं, उन्हीं से, मानो वे सुनने भर की दूरी पर खड़े हों। उनके पहले शब्द शिकायत नहीं, स्तुति हैं: यह छोटी-सी गोप-बस्ती सारी सृष्टि से अधिक उज्ज्वल हो उठी, क्योंकि प्रभु ने यहीं अवतरित होना स्वीकार किया, और उस घड़ी से लक्ष्मीजी ने इसे छोड़ना स्वीकार न किया।

गोप्य ऊचुः

जयति तेऽधिकं जन्मना ब्रजः

श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि ।

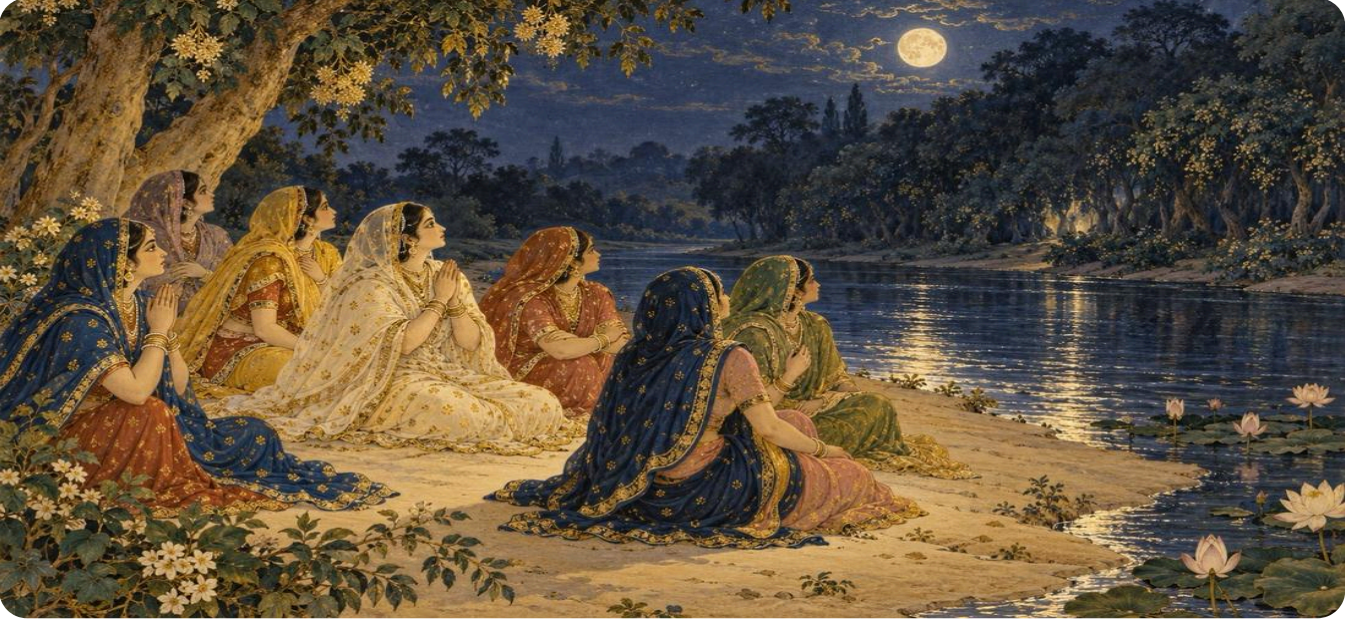
दयित दृश्यतां दिक्षु तावका-

स्त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते ॥ १ ॥

gopya ūcuḥ jayati te 'dhikam janmanā vrajaḥ śrayata indirā śaśvad atra hi dayita dṛśyatām dikṣu tāvakās tvayi dhṛtāsavas tvām vicinvate

अर्थ: आपके यहाँ अवतरित होने से ब्रज की महिमा और भी अधिक बढ़ गई है, क्योंकि लक्ष्मीजी निरन्तर यहीं निवास करती हैं। हे प्रियतम! चारों दिशाओं में दृष्टि डालिए — आप ही में अपने प्राण रख चुकी आपकी ये गोपियाँ सब ओर आपको ही खोज रही हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 31, श्लोक 1)

जिस भूमि ने उन्हें पाया, उसकी महिमा गाकर ही वे अपनी बात कहती हैं: शरद्-सरोवर में खिले कमल की शोभा चुरा लेने वाले आपके नेत्र उन्हीं दासियों का वध कर रहे हैं जो बिना मोल या अधिकार आपकी सेवा करती हैं — क्या यह हत्या नहीं है, वे सीधे पूछ बैठती हैं। ऐसा साहस केवल प्रेम को शोभा देता है।



कालिन्दी की शीतल बालू पर बैठकर गोपियाँ श्याम वन की ओर मुख कर गाती हैं कि उनके अवतार से व्रज उज्ज्वल हो उठा है, और उन्हीं में प्राण रख चुकी वे चारों दिशाओं में उन्हें खोज रही हैं (श्लोक 1)।

बारम्बार की गई उनकी रक्षा का स्मरण

पीड़ा से गीत वहीं मुड़ता है जहाँ भक्ति सदा मुड़ती है — स्मरण की ओर। वे स्मरण करती हैं कि प्रभु ने बार-बार समस्त व्रज को मृत्यु के मुख से खींच लिया: विष से मारक बने जल से, सर्प-वेशी राक्षस से, प्रचण्ड वर्षा और आँधी से, बिजली की अग्नि से, गोधन के बीच बछड़े का शरीर धर खड़े असुर से, और मय के पुत्र से।

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद्
वर्षमारुताद् वैद्युतानलात् ।
वृषमयात्मजाद् विश्वतो भया-
दृषभ ते वयं रक्षिता मुहुः ॥ ३ ॥

viṣa-jalāpyayād vyāla-rākṣasād varṣa-mārutād vaidyutānalāt vṛṣa-mayātmajād viśvato bhayād ṛṣabha te vayaṁ rakṣitā muhuḥ

अर्थ: हे पुरुषश्रेष्ठ! विषैले जल से, सर्परूपी राक्षस से, वर्षा और आँधी से, बिजली की अग्नि से, बछड़े के रूप में आए असुर से तथा मय के पुत्र से, और संसार के प्रत्येक भय से आपने हमारी बारम्बार रक्षा की है। (स्कन्ध 10, अध्याय 31, श्लोक 3)

इस स्मृति में एक अनकहा प्रश्न भी है: जिन्होंने हर संकट से निकाल लिया, वे अब उन्हें अपने ही विरह में मिटने देंगे?

वे केवल किसी गोपी के पुत्र नहीं हैं

इसके बाद गीत व्रज की सीमा से ऊपर उठ जाता है। अपनी गोचर भूमि से कभी बाहर न गई ये ग्राम-वधुएँ घोषित करती हैं कि वे किसके लिए रो रही हैं।

न खलु गोपीकानन्दनो भवान्
अखिलदेहिनामन्तरात्मदृक् ।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान् सात्वतां कुले ॥ ४ ॥

na khalu gopīkā-nandano bhavān akhila-dehinām antarātma-dṛk vikhanasārthito viśva-guptye sakha udeyivān sātvatām kule

अर्थ: आप निश्चय ही केवल किसी गोपी के पुत्र नहीं हैं; आप समस्त देहधारियों के अन्तःकरण के साक्षी हैं। हे सखा! ब्रह्माजी की प्रार्थना पर विश्व की रक्षा के लिए आपने सात्वतों के वंश में अवतार लिया है। (स्कन्ध 10, अध्याय 31, श्लोक 4)



गोपियाँ स्वयं घोषित करती हैं कि वे केवल गोप-बालक नहीं, हर हृदय के साक्षी हैं, जो ब्रह्माजी की प्रार्थना पर समस्त लोकों की रक्षा के लिए अवतरित हुए (श्लोक 4)।

अतः यह किसी मोहक ग्राम-बालक पर गाँव का स्नेह नहीं है। यह प्रेम खुली आँखों से उन परम पुरुष को अर्पित है जो हर हृदय के भीतर से देखते हैं और सृष्टिकर्ता की प्रार्थना पर लोकों की रक्षा हेतु उतरे। यह जानकर भी वे उन्हें प्रियतम ही कहती हैं — यही व्रज का आश्चर्य है, जहाँ परम सत्य और घनिष्ठ स्नेह एक श्वास में बसते हैं।

उनके कर, श्रीमुख और चरणों की याचना

वे कौन हैं, यह कह लेने पर गोपियाँ वही माँगती हैं जो केवल वे ही दे सकते हैं। अपना कर-कमल हमारे सिर पर रखिए, वे गाती हैं — वह हाथ जो जन्म-मृत्यु के भय से शरण आए सबको अभय देता है, जो माँगी हर वस्तु पूर्ण करता है, और जिसने श्री का हाथ ग्रहण किया। हे ब्रजवासियों के दुःखहारी, जिनकी मुस्कान अपने ही जनों का अभिमान चूर कर देती है, इन दासियों को स्वीकार कीजिए और वह सुन्दर मुख-कमल फिर दिखा दीजिए। फिर वे चरणों की याचना करती हैं: वे चरण जो प्रणत हर प्राणी के पाप धो देते हैं, घास चरती गौओं के पीछे स्नेह से चलते हैं, समस्त श्री के निवास हैं, और इसी नदी में कालिय के फणों पर निर्भय रखे गए थे। उन्हें हमारे वक्ष पर रखिए और हृदय की यह व्याकुलता काट दीजिए।

उनकी वाणी का अमृत और कथा का वरदान

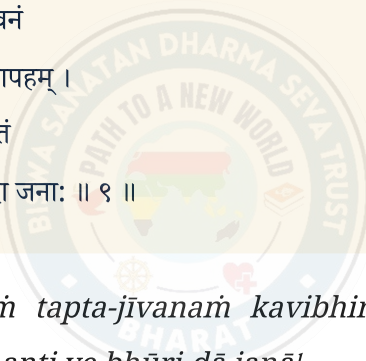
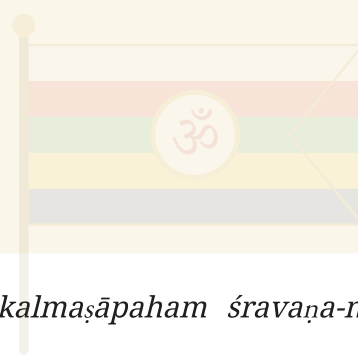
अगली प्रार्थना उनकी वाणी के लिए है। हम आपकी आज्ञा मानने को तत्पर हैं, वे कहती हैं, और आपकी उस मधुर वाणी ने हमें मुग्ध कर दिया है जिसके मनोहर पद विद्वानों को भी आनन्द देते हैं; हे कमलनयन! अधरों के अमृत से इन्हें जिला दीजिए। और तभी, शोक के बीच ही, गीत कुछ अविस्मरणीय करता है: वह अपने लिए माँगना छोड़कर समस्त संसार को आशीर्वाद दे देता है।

तव कथामृतं तप्तजीवनं

कविभिरीडितं कल्मषापहम् ।

श्रवणमङ्गलं श्रीमदाततं

भुवि गृणन्ति ये भूरिदा जनाः ॥ ९ ॥



tava kathāmṛtaṁ tapta-jīvanaiḥ kavibhir īḍitaṁ kalmaṣāpaham śravaṇa-maṅgalaṁ śrīmad ātataṁ bhuvi gṛṇanti ye bhūri-dā janāḥ

अर्थ: आपकी कथा अमृत है, तप्त जीवों के लिए जीवन है, मनीषियों द्वारा गाई गई है, पापों को हर लेती है, सुनने में मंगलमयी और श्री से परिपूर्ण है। इस पृथ्वी पर जो उसका विस्तार से गान करते हैं, वे ही सबसे बड़े दानी हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 31, श्लोक 9)

ऐसे विरह में भी उन्हें स्मरण रहता है कि यह रस बाँटा जा सकता है। उनकी महिमा कहना-सुनना ही हर तप्त हृदय की औषधि है, और जो उस कथा को पृथ्वी पर फैलाते हैं, वे सबसे बड़ा दान देते हैं।



अपने शोक के बीच ही गोपियाँ समस्त संसार को आशीर्वाद देती हैं: जो उनकी अमृतमयी कथा को पृथ्वी पर फैलाते हैं, वे ही सबसे बड़े दानी हैं (श्लोक 9)।

वे स्मृतियाँ जो हृदय को चैन नहीं देतीं

फिर स्मृतियाँ लौटती हैं और शान्त नहीं होतीं: उनका खुला हास्य, तिरछी स्नेह-दृष्टि, वे लीलाएँ जिनका चिन्तन भी मंगल है, और एकान्त में कहे वे विनोद-वचन जो सीधे हृदय में उतर गए। यह सब अब मन को असह्य मथता है, और वे आधी शिकायत तथा पूरी विवशता से उन्हें छलिया कह उठती हैं।

अगली स्मृति उनके अपने सुख की नहीं, प्रभु के लिए चिन्ता की है। प्रतिदिन प्रातः वे गोधन के पीछे ब्रज से निकल जाते हैं, और दिनभर गोपियाँ अशान्त रहती हैं कि कमल-सदृश कोमल चरणों को तीखी घास, अन्न के छिलके और कठोर अंकुर सहने पड़ते हैं। संध्या को वे लौटते हैं — घुँघराले श्यामल केशों से घिरा मुख, गौओं की धूल से धूसर — और दर्शन देते हैं; वही दर्शन उनके प्रेम को प्रतिदिन नया कर देता है।



प्रतिदिन संध्या को वे गोधन के पीछे लौटते हैं — घुँघराले श्यामल केशों से घिरा मुख, गौओं की धूल से धूसर — और वही दर्शन ब्रज के प्रेम को नया कर देता है।

जब क्षण का एक अंश युग बन जाता है

गीत फिर उनके चरणों पर लौटता है और वर्णन करते थकता नहीं: वे प्रणत जनों की कामनाएँ पूर्ण करते हैं, कमल से उत्पन्न ब्रह्माजी उनकी पूजा करते हैं, वे पृथ्वी के आभूषण और विपत्ति में ध्यान योग्य एकमात्र आश्रय हैं। उन्हें हमारे वक्ष पर रखकर यह पीड़ा हर लीजिए, गोपियाँ विनती करती हैं। अधरों का वह अमृत भी दीजिए जो आनन्द बढ़ाता और शोक नष्ट करता है, जिसे आपके बजाते ही वंशी भरपूर पी लेती है, और जो हर दूसरे मोह से विमुख कर देता है। और तब, एक विस्मयकारी पंक्ति में, वे नाप देती हैं कि उनका विरह समय के साथ क्या करता है।

अटति यद् भवानह्नि काननं

त्रुटि युगायते त्वामपश्यताम् ।

कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते

जड उदीक्षतां पक्ष्मकृद् दृशाम् ॥ १५ ॥

aṭati yad bhavān ahni kānanaṁ truṭi yugāyate tvām apaśyatām kuṭila-kuntalaṁ śrī-mukhaṁ ca te jaḍa udīkṣatām pakṣma-kṛd dṛśām

अर्थ: जब आप दिन में वन को चले जाते हैं, तब आपको न देख पाने वाली हमारे लिए क्षण का एक अंश भी युग बन जाता है। और आपके घुँघराले केशों से घिरे श्रीमुख को अपलक देखती रहने वाली हमारी आँखों में पलकें रचने वाला कितना मन्दबुद्धि है! (स्कन्ध 10, अध्याय 31, श्लोक 15)

उनके लिए सब कुछ छोड़ आई

अब वे स्मरण कराती हैं कि इस प्रेम ने उन्हें क्या-क्या छोड़ना पड़ा। पति, सन्तान, कुटुम्बी और भाई-बन्धु — सब उस रात लाँघकर पीछे छूट गए, जब वंशी की तीव्र तान से मोहित होकर और प्रभु की रीति जानते हुए भी वे उनके समीप चली आई। वे पूछती हैं, छलिया के अतिरिक्त कौन पुरुष ऐसी घड़ी में आई असहाय स्त्रियों को छोड़ देता है? एकान्त के उनके वचन, हृदय में उठता प्रेम, मुस्कराता मुख, स्नेहभरी दृष्टि और श्री का निवास वह विशाल वक्ष — यह सब लौट-लौटकर उन्हें विह्वल कर देता है। फिर वे अवतार का सरल सत्य कहती हैं: उनके प्रकट होने से ब्रज के वनों में बसने वाले सबका शोक मिट गया और वह समस्त विश्व के लिए परम मंगलमय है; अतः अपने जनों के हृदय-रोग को मिटाने वाली उस औषधि का थोड़ा अंश वे बिना संकोच दे दें।

उनकी अन्तिम प्रार्थना

अन्तिम श्लोक में गोपियाँ स्वयं को पूर्णतः भूल जाती हैं।

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु ।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित्
कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥ १९ ॥

*yat te sujāta-caraṇāmburuhaṁ staneṣu bhītāḥ śanaiḥ priya dadhīmahi karkaśeṣu tenāṭavīm aṭasi
tad vyathate na kiṁ svit kūrpadibhir bhramati dhīr bhavad-āyusāṁ naḥ*

अर्थ: हे प्रिय! आपके जिन सुकोमल चरण-कमलों को हम डरते-डरते धीरे से अपने कठोर वक्ष पर रखती हैं, उन्हीं चरणों से आप वन-वन विचरते हैं। कंकड़-पत्थर आदि से उन्हें पीड़ा नहीं होती? आप ही हमारे प्राण हैं — यह सोचकर हमारी बुद्धि व्याकुल हो उठती है। (स्कन्ध 10, अध्याय 31, श्लोक 19)

यहाँ गीत वह प्रकट कर देता है जिसकी ओर वह आरम्भ से बढ़ रहा था। जिन्होंने यह कहकर आरम्भ किया था कि उनकी दृष्टि हमें मार रही है, वे अपनी वेदना का एक शब्द कहे बिना समाप्त करती हैं — चिन्ता केवल इतनी कि वन-पथ के कंकड़ उनके चरणों को कष्ट न दें। जो प्रेम कुछ अपनी ओर मुड़ा है, वह अपने घाव से छुटकारा चाहता है; जिसे विरह ने निर्मल कर दिया, वह घाव भूलकर केवल प्रियतम के सुख को तड़पता है। और क्योंकि वे उन्हें हर हृदय का साक्षी तथा लोकों की रक्षा हेतु अवतीर्ण घोषित कर चुकी हैं (श्लोक 4), यह भावुकता नहीं, शास्त्र को ज्ञात सर्वोच्च उपासना है। प्रेम में सहा विरह भक्ति को दुर्बल नहीं करता; वह भक्ति में बचे अपनेपन को जला देता है।



उनकी अन्तिम प्रार्थना अपना शोक पूरी तरह भूलकर केवल इस विचार से काँप उठती है कि वन-पथ के कंकड़ उनके सुकोमल चरणों को छू रहे हैं (श्लोक 19)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. जहाँ वे स्वीकारे जाते हैं, वही स्थान महिमामय हो जाता है। व्रज सब स्थानों से उज्ज्वल है, क्योंकि प्रभु वहाँ अवतरित हुए और लक्ष्मीजी ने उसे छोड़ना स्वीकार न किया (श्लोक 1)।

2. स्मरण ही विरह की औषधि है। गोपियाँ शोक का उत्तर उनकी हर रक्षा गिनकर देती हैं (श्लोक 3)। प्रभु दूर प्रतीत हों, तब उनके उपकारों का स्मरण मन को स्थिर करता है।
3. वे प्रत्येक हृदय के भीतर विराजमान साक्षी हैं। गोपियाँ स्वयं कहती हैं कि वे ग्राम-बालक मात्र नहीं, समस्त प्राणियों के अन्तःसाक्षी हैं, जो ब्रह्माजी की प्रार्थना पर उतरे (श्लोक 4)। निकटता के लिए उन्हें छोटा मानना आवश्यक नहीं।
4. उनकी कथा का प्रसार सबसे बड़ा दान है। जो उनकी अमृतमयी महिमा का विस्तार से गान करते हैं, वे परम दानी कहे गए हैं, क्योंकि वे तप्त जीवों को जीवन बाँटते हैं (श्लोक 9)।
5. प्रेम समय का माप बदल देता है। जो उन्हें देख नहीं पाता, उसके लिए क्षण युग बन जाता है (श्लोक 15) — दुर्बलता नहीं, अपना एकमात्र धन पा चुके हृदय का चिह्न।
6. पूर्ण प्रेम स्वयं को भूल जाता है। उनकी अन्तिम प्रार्थना अपने लिए कुछ नहीं माँगती, केवल इस भय से काँपती है कि उनके चरणों को चोट न लगे (श्लोक 19) — यही वह शिखर है जिस पर भक्ति चढ़ती है।

एक भक्तिमय चिन्तन

हम अधिकांश लोग प्रार्थना तब सीखते हैं जब कुछ छूट जाता है। हम यही कहकर आरम्भ करते हैं कि प्रभु का न होना हमें क्या कर रहा है — ऐसे आरम्भ में कोई दोष नहीं; भागवत ने इसे संसार के सर्वाधिक निर्मल प्रेमियों के मुख में रखा है। यह गान दिखाता है कि ऐसी प्रार्थना पूरी यात्रा चलने दी जाए तो कहाँ पहुँचती है: अपनी वेदना से उनकी महिमा तक, महिमा से उन संकटों की कृतज्ञता तक जिनसे वे पार लगा चुके हैं, कृतज्ञता से इस पहचान तक कि वे वस्तुतः कौन हैं, और वहाँ से इस कामना तक कि सारा संसार वही अमृत चखे। अन्तिम श्लोक तक प्रार्थना करने वाली अपनी चर्चा ही छोड़ देती है। ऐसा प्रेम हम गढ़ नहीं सकते; पर अपनी प्रार्थनाओं को उसी दिशा बहने दे सकते हैं — सच्चे आरम्भ से, वहीं न रुकने के संकल्प से, और अन्त में केवल उन्हीं में विश्राम से।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज गोपी-गीत का एक श्लोक चुनिए — उनकी रक्षा का स्मरण, कथा कहने वालों को दिया आशीर्वाद, अथवा उनके चरणों की वह अन्तिम प्रार्थना — और उसे दिनभर काम के साथ लिए चलिए। मन अशान्त हो, तब पीड़ा से हटकर स्मरण की ओर मुड़िए: प्रभु ने जिस एक प्रकार से आपकी रक्षा की, उसे याद कर प्रत्यक्ष धन्यवाद दीजिए। फिर किसी एक व्यक्ति को उनकी कथा सुनाइए, एक वाक्य में ही, और धीरे से जपिए: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

बाहर इस अध्याय में कुछ नहीं घटता; भीतर सब कुछ खुल जाता है। कालिन्दी की बालू पर, ढलती चाँदनी में, गोपियाँ उन प्रभु को गाती हैं जो दिखाई नहीं देते, और उनका गीत उन्हें विरह के घाव से स्तुति तक, स्तुति से कृतज्ञता तक, कृतज्ञता से इस घोषणा तक ले जाता है कि वे सब हृदयों के साक्षी हैं, और अन्त में उस प्रार्थना तक जो अपने लिए कुछ नहीं रखती। गोपी-गीत हमें भी ऐसा ही प्रेम सिखाए — शोक में सच्चा, माँगने में निडर, और अन्त में केवल उन्हीं का चिन्तन करने वाला।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (पूर्ण संस्करण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), एकत्रिंश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-31-the-gopis-songs-of-separation-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट